uba – iitk

a story in the making
July 2017 – March 2018

Sandeep Sangal
Indian Institute of Technology Kanpur

Partnership Approach

- NSS students
- Large number of volunteers
- Student Gymkhana Clubs (film society, dramatics, fine arts, etc.)
- Institutes in the neigbourhood, such as, Kanpur University, PSIT
- Organizations and NGOs: Kanpur Parivartan Forum, Muskan Jyoti, E-Spin Nanotech

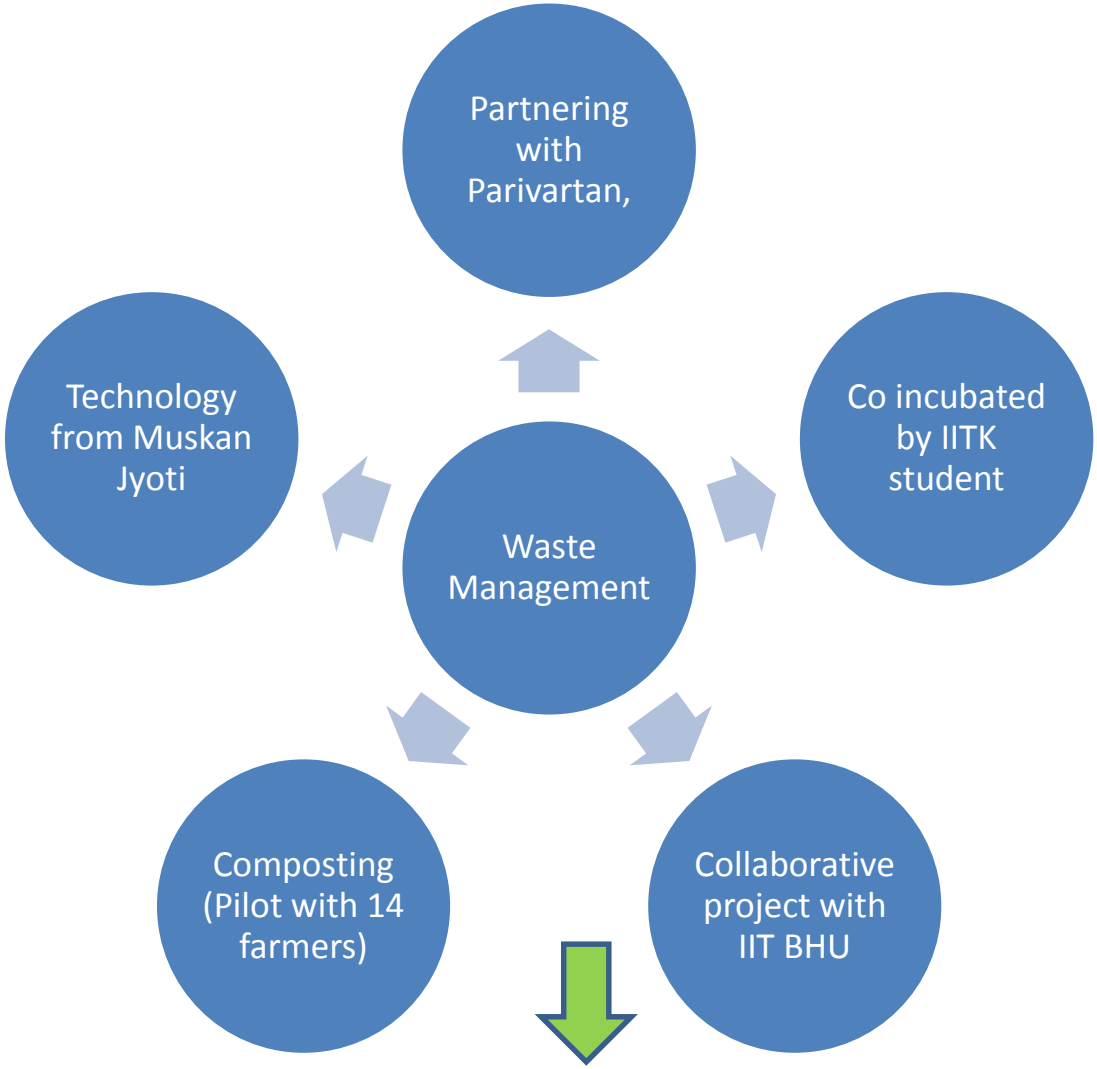

Organic Village
Waste to Energy
Improved agriculture
Swachch Village

7
18
20

Volunteers
NSS students

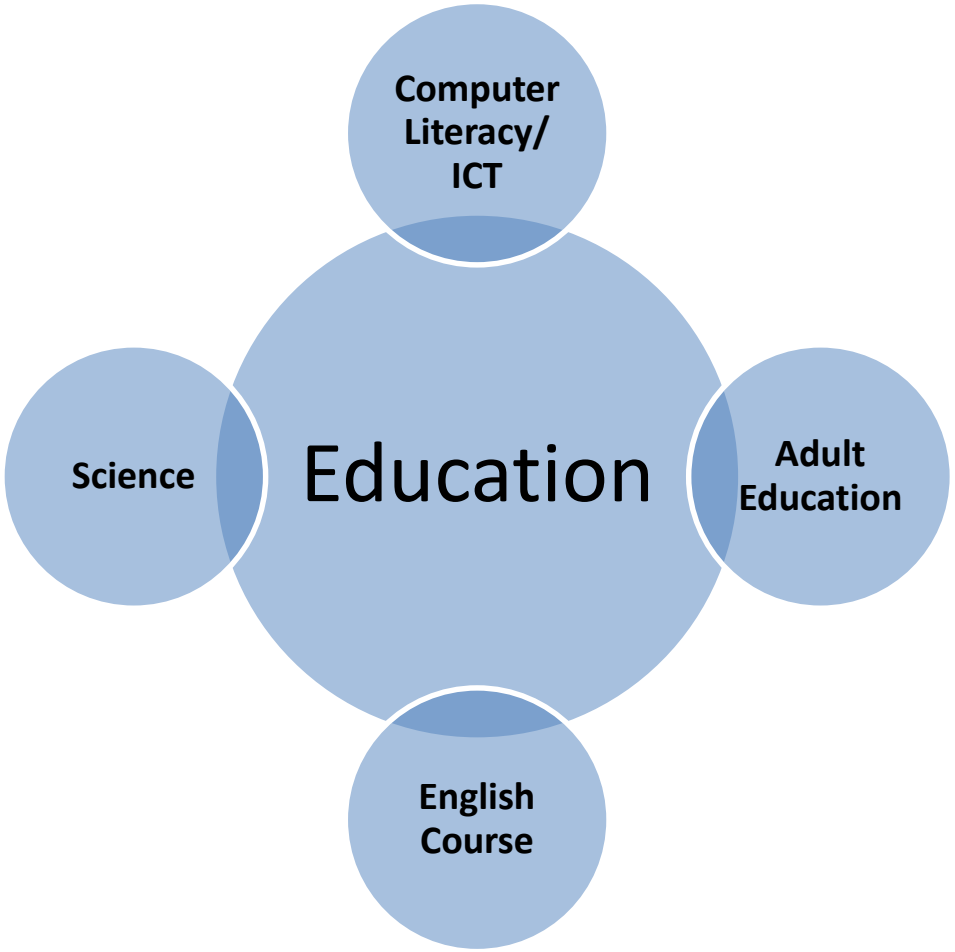

Training of science teachers (5-days
Science Show at IITK
Science experiments

Tie up with NABARD
Formation of SHG
Financial Literacy

Volunteers
NSS students

UBA-IITK Driven by Students

- **Cultural**
  - Film making
  - Fine arts
  - Nukkad
- **S & T**
  - Science shows
  - Teachers Training
- **Sports**
  - Khelo India/ IITK
  - Infrastructure
- **Others**
  - Amar Ujala Column
  - Documenting stories
  - Blood Donation camp

Sanitation

Malnutrition

Village Democracy

Financial Literacy

Publishing stories
Articles by IITK students

आउट ऑफ कोर्स

रोज छोटे-छोटे काम एक दिन बड़े काम के रूप में पहचान बनाएंगे, ये किसी ने सोचा नहीं होगा। दुनिया के बड़े लेखकों में शुमार रॉबिन शर्मा की यह सूक्ति मैंने शकशूपरवा गांव जाकर प्रत्यक्ष रूप से देखी। - देबाशीष रियांग, छात्र, बीटेक, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, आईआईटी कानपुर

एक गांव, जिसे हमने बदलते देखा

कल्याणपुर-बिठूर मार्ग पर बसे इस गांव ने हम आईआईटीयंस को बेहद गहराई तक प्रभावित किया। कहने को तो यह शहर से काफी नजदीक है, लेकिन कभी इसकी दशा चिंतनीय थी। अपने सामाजिक सरोकारों के निर्वहन के सिलसिले में पिछले दिनों जब हमारी टीम इस गांव पहुंची और लोगों से बातचीत की तो यह जानकर हम हैरान थे कि उन्हें स्वच्छता अभियान और खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) अभियान के बारे में कुछ पता ही नहीं था। यह भी नहीं कि इससे क्या बीमारियां हो सकती हैं। हाल तक यहां 95 फीसदी लोग खुले में ही शौच को जाते थे। यह चौंकाने वाला आंकड़ा था। खैर, हम उन्हें जितना समझा सकते थे, समझाया।

उस दिन हम देर शाम गांव से कैंपस लौटे। हमें लगा कि उन्हें बदलना काफी मुश्किल होगा और इसमें लंबा समय लगेगा, लेकिन हार नहीं मानी। पूरी तैयारी के साथ एक रविवार फिर गांव पहुंचे। गांववालों से बातचीत की शुरुआत की, लेकिन इस बात से हैरत में थे कि उनकी सोच अचानक कैसे बदल गई। उन्हें स्वच्छता की जरूरत समझ आ चुकी थी।

शौचालयों के प्रति जागरूक दिख रहे थे। उत्सुकतावश इस परिवर्तन का कारण पता लगाया तो इस सबके पीछे गांव की ही 20 साल की एक युवती प्रतिमा निकली। वह रोज सुबह उठकर ग्रामीणों को खुले में शौच जाने से रोकती। उन्हें इसके नुकसान बताती। प्रतिमा की इस कोशिश ने हमारी टीम को काफी प्रभावित किया। हमने उसका साथ देने का संकल्प लिया और हर रविवार गांव के एक-एक घर जागरूकता फैलाने पहुंचे। इसका आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिला। एक समय ऐसा भी आया कि गांव के हर घर में शौचालय बन गया।

गांव के बुजुर्ग कहते हैं कि आने वाली पीढ़ी के बेहतर भविष्य के लिए उन्होंने शौचालय बनवाए हैं। उनकी बातें भले ही मामूली या छोटी लगें, लेकिन उसका संदेश बड़ा था। मेरे लिए यह व्यक्तिगत गर्व की बात थी कि ग्रामीणों ने न सिर्फ अपने गांव को खुले में शौच से मुक्त कराया, बल्कि अब अपने गांव को स्वच्छ बनाने में भी जुट गए हैं। ग्रामीण पूरे भरोसे से कहते हैं कि कुछ ही महीने में वे यह काम भी कर दिखाएंगे।

उनका उत्साह देखकर मुझे तो पूरा यकीन है कि वे अपना लक्ष्य हासिल कर लेंगे। उनकी राह में जो परेशानी आएगी, उसे दूर करने के लिए हम आईआईटीयंस उनके साथ हमेशा खड़े हैं। यह गांव एक नजीर है उन गांवों के लिए जो अभी तक स्वच्छता का संदेश नहीं समझ पाए हैं।

आउट ऑफ कोर्स

जीवन संघर्ष का दूसरा नाम है। दुख और सुख के बीच झूलता है, फिर भी चलता रहता है। वक्त के साथ सभी को आगे बढ़ना और खुद को बदलना पड़ता है। जीना इसी का नाम है। महिलाओं को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की मुहिम में हमने भी बिठूर के पास स्थित गांव शकशूपरवा में जीवन को बदलते देखा। - अमन पांडेय, छात्र बीएस केमिस्ट्री फर्स्ट ईयर, आईआईटी कानपुर

उन्होंने घर की दहलीज लांघी, हम बदलाव ला रहे

बिठूर के पास स्थित गांव शकशूपरवा की महिलाओं के जज्बे को हम सलाम करते हैं। इसलिए कि वह जीवन में बदलाव को तैयार हुईं। अपने गांव को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाने के लिए घर की चहारदीवारी लांघीं। हमारे महिला शिक्षा अभियान से जुड़ीं। मैं गर्व से कह सकता हूं कि जिस टीम का हिस्सा रहा, वह इस बदलाव की गवाह बनी।

दरअसल, महिलाओं को मूलभूत सुविधाओं, उन्हें आत्मनिर्भर बनाने और उनके अधिकारों को बताने के लिए मैं और मेरे साथी शकशूपरवा गांव पहुंचे थे। बात करीब चार माह पहले की है। हमें यह भी नहीं मालूम था कि गांव की महिलाएं हमारे

इस अभियान का हिस्सा बनेंगी। हम तो बस अपना प्लान लेकर पहुंच गए थे। गांव की महिलाओं को एक जगह बुलाकर हमने उन्हें अपनी योजना बताई। ईश्वर को शुक्रिया अदा करेंगे कि उन्हें हमारी योजना अच्छी लगी, तो हमें अपने अभियान को मंजिल तक पहुंचाने की उम्मीद नजर आई। इसके बाद हमने अपना काम शुरू कर दिया।

शुरुआत हमने उन्हें पढ़ाने से की। इस दौरान थोड़ी मुश्किलें भी पेश आईं। वजह यह कि महिलाओं के शैक्षिक स्तर में काफी अंतर था। इसके अलावा कई महिलाएं अपने छोटे-छोटे बच्चों को भी साथ ले आतीं। इससे उन्हें पढ़ाने में दिक्कतें आईं। इससे बचने के लिए हमने महिलाओं को उनकी शिक्षा के हिसाब से छोटे-छोटे समूहों में बांटकर पढ़ाई शुरू कराई। इसमें हम सफल हुए और अब ये महिलाएं भी हमारी योजना के अनुसार पढ़ाई में रुचि लेने लगी हैं। अब हम इन्हें पढ़ाई के साथ-साथ उन्हें उनके अधिकारों की भी जानकारी दे रहे हैं। हमारी इस मुहिम से 30 से ज्यादा महिलाएं जुड़ चुकी हैं। हम उन्हें घर खर्च का हिसाब-किताब, रोजमर्रा के कामों की योजना बनाना भी सिखा रहे हैं। आने वाले दिनों में हम उन्हें स्वास्थ्य, योग, व्यायाम, उनके लिए चल रही सरकारी योजनाओं, पर्यावरण संरक्षण के अलावा आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने के संबंध में जानकारी देंगे। अब हमारा उद्देश्य यही है इन महिलाओं को पूर्ण रूप से स्वावलंबी बनाएं, जिससे उन्हें किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े।

Documentation

SHAMMI BABA: THE UNTOLD STORY

Shammi Baba is the torch-bearer of 'CHANGE' in his village. Driven by the motivation for a better India for the Gen-Next, he single-handedly headed all the reform activities like disposal of solid waste, construction of toilets, cleanliness drive in his village. His vision includes-employment of women, education of children, clean village in next few weeks.

Such is the enthusiasm of him that he keeps a track of all the activities going on in the village and takes personal guarantee in getting things done. Well done Sir! We need more people like you.
#TeamUBA #NSS

Road Blocks

- Violence in Baikunthpur (land disputes halted the pond cleaning work, jointly planned with CSR funds of Kanpur Plastic Pack)
- Garbage pick up with support of Parivartan Kanpur unable to takeoff properly as funds are not available for safai karmi